भगत नामदेव - सबद १०

पाड़ पड़ोसणि पूछि ले नामा का पहि छानि छवाई हो ॥

रागु सोरठि, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ६५७

पाड़ पड़ोसणि पूछि ले नामा का पहि छानि छवाई हो ॥
तो पहि दुगणी मजूरी दैहउ मो कउ बेढी देहु बताई हो ॥१॥
री बाई बेढी देनु न जाई ॥
देखु बेढी रहिओ समाई ॥
हमारै बेढी प्रान अधारा ॥१॥ रहाउ ॥
बेढी प्रीति मजूरी मांगै जउ कोऊ छानि छवावै हो ॥
लोग कुट्मब सभहु ते तोरै तउ आपन बेढी आवै हो ॥२॥
ऐसो बेढी बरनि न साकउ सभ अंतर सभ ठांई हो ॥
गूंगै महा अमृत रसु चाखिआ पूछे कहनु न जाई हो ॥३॥
बेढी के गुण सुनि री बाई जलधि बांधि ध्रू थापिओ हो ॥
नामे के सुआमी सीअ बहोरी लंक भभीखण आपिओ हो ॥४॥२॥

सार: साधक की खोज सत्य और आत्म-साक्षात्कार की ओर एक यात्रा है, जो मन और शरीर की सीमाओं से परे है। दूसरों से उधार ली गई अपेक्षाओं के बजाय, भीतरी गहरी चाह से उपजी यह यात्रा हमें धीरे-धीरे सामाजिक, धार्मिक और पारिवारिक संस्कारों की बेड़ियों से मुक्त कर देती है। अंत में जो शेष रह जाता है, वह है, पारिवारिक मान्यताओं के बजाय, अपने अनुभव से प्रेरित खोज। फिर भी, सत्य की यह खोज तब तक अमूर्त लग सकती है, जब तक हमारे भीतर प्रेम जागृत नहीं होता जो हमें संपूर्ण सृष्टि का अनुभव करने में सक्षम बनाता है। इस स्पष्टता की अवस्था में, ज्ञान 'विवेक' में रूपांतरित हो जाता है, विभाजन मिटकर एकता में विलीन हो जाते हैं और अनेकता सिमटकर 'एक' में समाहित हो जाती है।

पाड़ पड़ोसणि पूछि ले नामा का पहि छानि छवाई हो ॥
पड़ोसी नामदेव से पूछता है कि उनके घर की छत किसने बनाई। यह प्रश्न लाक्षणिक रूप से ऐसे साधक का प्रतिनिधित्व करता है जो जीवन में स्थिरता और आधार के लिए सद्गुणों की तलाश में है।

तो पहि दुगणी मजूरी दैहउ मो कउ बेढी देहु बताई हो ॥१॥
मैं तुम्हें दुगनी मज़दूरी दूँगा, बस मुझे यह बता दो कि तुम्हारा बढ़ई कौन है। यह अनुरोध साधक की जागरूकता प्राप्त करने की तीव्र इच्छा को दर्शाता है। (१)

री बाई बेढी देनु न जाई ॥
हे साथी, इस बढ़ई को किसी और को नहीं दिया जा सकता। यह इस बात का प्रतीक है कि व्यक्ति दिव्यता का अनुभव तो कर सकता है लेकिन शब्दों में इसे व्यक्त नहीं कर सकता।

देखु बेढी रहिओ समाई ॥
देखो, वह बढ़ई तो सर्वत्र व्याप्त है। यह कथन उस सर्वव्यापी ऊर्जा की एकता को साकार रूप देता है जो समस्त सृष्टि में विद्यमान है।

हमारै बेढी प्रान अधारा ॥१॥ रहाउ ॥
हमारा बढ़ई, अर्थात हमारी जीवन-शक्ति ही हमारा एकमात्र आधार है। यह बताता है कि सर्वव्यापी ऊर्जा ही समस्त अस्तित्व का मूल स्रोत है। (१)(विराम)

बेढी प्रीति मजूरी मांगै जउ कोऊ छानि छवावै हो ॥
जो कोई भी अपना घर बनवाना चाहता है, उससे वह बढ़ई मज़दूरी के रूप में केवल 'प्रेम' की ही माँग करता है। यह हमें याद दिलाता है कि दिव्यता की खोज के लिए करुणा अनिवार्य है।

लोग कुट्मब सभहु ते तोरै तउ आपन बेढी आवै हो ॥२॥

जब सामाजिक और पारिवारिक बंधनों से मुक्त होते हैं तब आपका 'बढ़ई' प्रकट होता है। इसका अर्थ है कि आत्म-साक्षात्कार तभी संभव है जब व्यक्ति सभी तरह की पूर्व-निर्धारित मान्यताओं और संस्कारों से मुक्त हो। (२)

ऐसो बेढी बरनि न साकउ सभ अंतर सभ ठांई हो ॥

ऐसे बढ़ई का वर्णन नहीं किया जा सकता, वह सब के भीतर और हर जगह विद्यमान है। यह अवलोकन 'अद्वैतवाद' के दर्शन की पुष्टि करता है।

गूंगै महा अमृत रसु चाखिआ पूछे कहनु न जाई हो ॥३॥

उस मूक व्यक्ति की तरह जिसने अत्यंत मधुर और अमृत-तुल्य रस का स्वाद चखा हो और जब उससे उस अनुभव के बारे में पूछा जाता है तब वह उसका वर्णन करने में असमर्थ होता है। (३)

बेढी के गुण सुनि री बाई जलधि बांधि ध्रू थापिओ हो ॥

हे साथी! बढ़ई के गुणों को ध्यान से सुनो, उसी ने महासागरों के तट बाँधे हैं और ध्रुव तारे को उसके स्थान पर स्थापित किया है। यह प्रतीक है कि वह सर्वव्यापी ऊर्जा ही है जो सृष्टि के समस्त कर्मों में व्याप्त है।

नामे के सुआमी सीअ बहोरी लंक भभीखण आपिओ हो ॥४॥२॥

नामदेव कहते हैं कि उनके स्वामी ही वह शक्ति हैं जो सीता को वापस लाए और लंका का राज्य विभीषण को सौंपा। इसका निहितार्थ यह है कि सदाचार ही सर्वोच्च गुण है। (४)(२)

तत्त्व: भक्त नामदेव विनम्रतापूर्वक कहते हैं कि चेतना ऐसा अनुभव है जिसे न किराए पर लिया जा सकता है, न खरीदा जा सकता है और न ही उधार लिया जा सकता है। यह व्यक्ति की जीवन-शक्ति के मूल से उत्पन्न, ऐसी ऊर्जा है जो सर्वत्र विद्यमान है। इस सार्वभौमिक चेतना को महसूस तो किया जा सकता है लेकिन इसे शब्दों में पूरी तरह से व्यक्त नहीं किया जा सकता। यह सदैव उपलब्ध है

और कोई भी व्यक्ति, जो प्रेम और सदाचार के मार्ग पर चलने का चुनाव करता है, इस चेतना का अनुभव कर सकता है। यह चेतना ऐसे जुड़ाव को पोषित करती है जो केवल कोरे विश्वास से कहीं बढ़कर है और जीवन जीने का एक सच्चा व प्रामाणिक मार्ग है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com